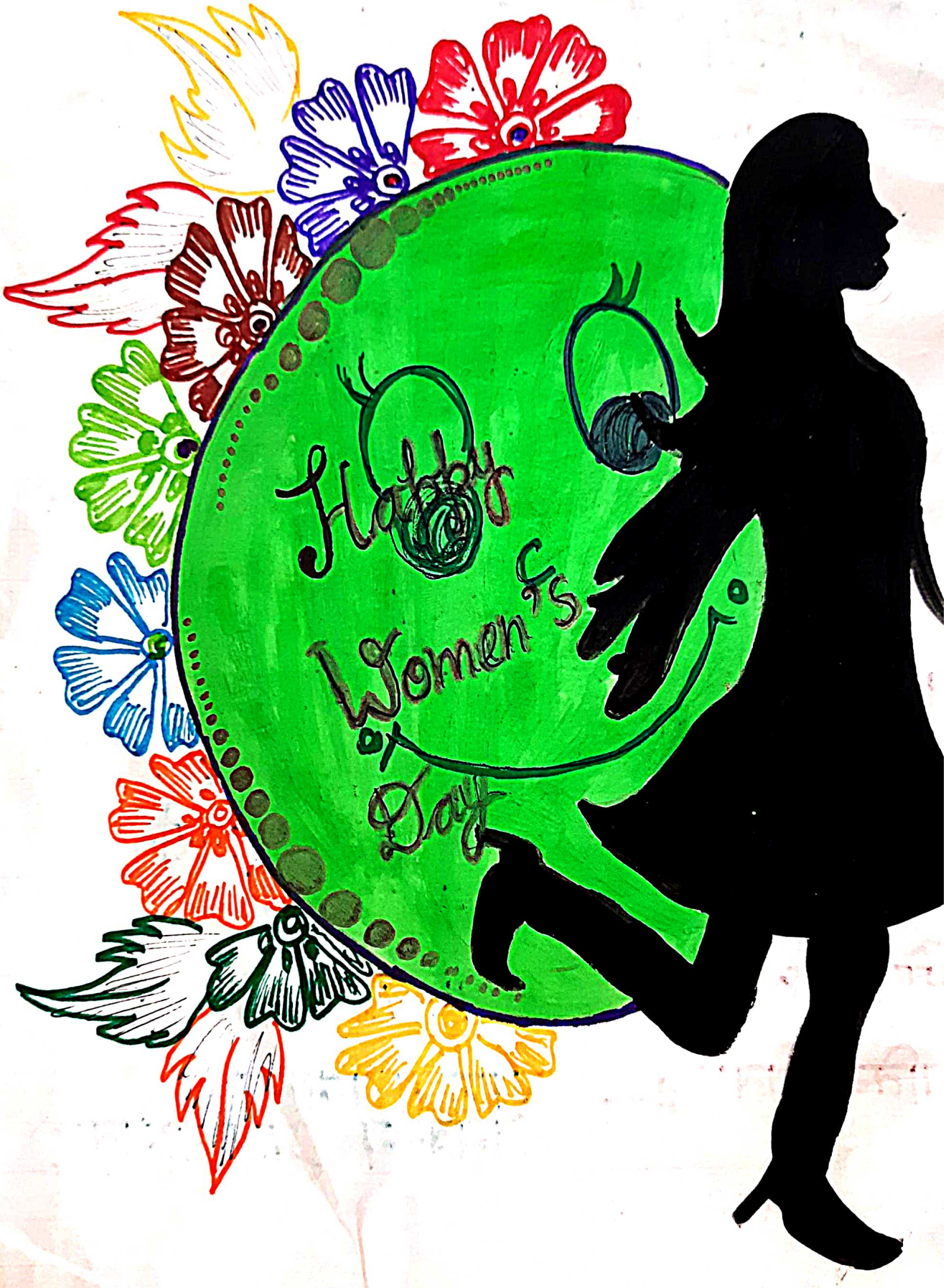
Happy
Women's
Day

राजकीय हाईस्कूल

रामपुर भीमसेन कानपुर नगर

नाम :- प्रिया गौतम

कक्षा :- 9वीं (नवीं)

रौल नं० :- 59

पिता का नाम :- श्री श्रीचन्द्र गौतम

पता :- कठारा का पुरवा
रामपुर भीमसेन
कानपुर नगर

मो० नं० :- 09793175528

प्रतियोगिता :- महिला दिवस
निबन्ध प्रतियोगि

महिला दिवस

" दिलों मे बस जाए वो मोहब्बत हूँ,
कभी बहिन, कभी ममता की मूरत हूँ।
मेरे आँचल से है चाँद सितारे,
माँ के कदमों में बसी एक जन्नत हूँ।
हर दर्द-ओ-गम को छुपा लिया सीने में
लब पे ना आये कभी वो हसरत हूँ।
मेरे होने से ही है यह कायनात जवान,
जिन्दगी की बेहद हसीं हकीकत हूँ।
हर रूप रंग मे ढल कर सवर जाऊं,
सब्र की मिसाल, हर रिश्ते की ताकत हूँ।
अपने हौसले से तकदीर को बदल दूँ,
सुन ले ऐ दुनिया, हाँ मैं औरत हूँ। "

Happy Women's Day

International Women's Day 2021 हर साल 8 मार्च को अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है महिला दिवस की शुरुआत वैसे तो 1908 में हुई थी लेकिन संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1975 मे इसे मान्यता दी हुई थी इसके बाद से विश्वभर के देशों मे 8 मार्च को महिला दिवस (Women's Day) मनाया जाने लगा.

हर साल महिला दिवस को अलग-अलग थीम के साथ मनाया जाता है, इस साल महिला दिवस की थीम " I am Generation Equality Realizing Women's right " है।

इसका मतलब महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करना और जेंडर इक्वेलिटी पर बात करना है।"

Women's Day :-

भारतीय संस्कृति मे नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है, किन्तु वर्तमान मे जो हालात दिखाई देते है। उसमे नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी 'अपने तरीके' से 'इस्तेमाल' कर रहा है। यह बेहद चिन्ताजनक बात है। संस्कृत मे एक श्लोक है। 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:। अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाए, इस पर विचार करना आवश्यक है।

माता का हमेशा सम्मान हो :-

माँ अर्थात माता के रूप मे नारी धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप मे है। माता यानी जननी। माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। माँ देवकी (कृष्ण) तथा माँ पार्वती (गणपति/कार्तिकेय) के संदर्भ मे हम देख सकते है इसे। किन्तु बदलते समय के हिसाब से संतानो ने अपनी माँ को महत्व देना कम कर दिया है।

यह चिन्ताजनक पहलू है। सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। परन्तु जन्म देनी वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए। जो वर्तमान में कम हो गया है। यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चहुं ओर पांव पसारता जा रहा है। इस बारे में नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए।

- **बाजी मार रही हैं लड़कियाँ :-**

अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियाँ आजकल बहुत बाजी मार रही हैं। इन्हें हर क्षेत्र में हम आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियाँ तेजी से आगे बढ़ रही हैं। किसी समय इन्हें कमजोर समझा जाता था। किन्तु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है। इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए।

- **विवाह पश्चात :-**

विवाह पश्चात तो महिलाओं पर और भी भारी जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। पति सास-ससुर, देवर-ननद की सेवा के पश्चात उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता।

वे कोल्हू के बैल की मानिंद घर-परिवार में ही खटती रहती है। संतान के जन्म के बाद तो उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। घर परिवार चौके - चूल्हे में खटते में ही एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है। पता ही नहीं चलता। कई बार वे अपने अरमानों का भी गला घोंट देती हैं घर - परिवार की खातिर। उन्हें इतना समय भी नहीं मिल पाता है वे अपने लिए भी जिएं। परिवार के की खातिर अपना जीवन होम करने में भारतीय महिलाएं सबसे आगे हैं। परिवार के प्रति उनका यह त्याग उन्हें सम्मान पा अधिकारी बनाता है।

त्याग की मूरत

कुछ माँगा नही, कुछ चाहा नही
बदला बस खुद को, कि रिश्ता टूट न जायेकी

आदतो को बदला, चाहतो को बदला
भले मेरे अरमानों ने, अपनी करवट को बदला

समन्दर की एक बूंद, बन जाऊ भले
बस समन्दर में, मेरा अस्तित्व तो रहें।

धूल का एक कण भी, मैं बन ना सकी
मेरे त्याग की ऊँचाई हो गई छवि ।।